नीतियाँ एवं कार्यक्रम

अंक अप्रैल–सितम्बर 2007 | संस्करण 1

सृजन संवाद

सूचना–पत्र, सेक्सुअल् एण्ड रिप्रोडक्टिव हेल्थ इनीशीएटिव् फॉर ज्वाईट एक्सन नेटवर्क, सृजन

मित्रों,

सृजन संवाद, सृजन नेटवर्क के अंर्तगत हमारी सफल सहयात्रा की नई उपलब्धि है। हमें इस सूचना–पत्र का प्रथम अंक प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। कुछ ही वर्षों में हमने युवाओं के यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य एंव अधिकारों से संबंधित कई विषयों पर अच्छी समझ, तकनीकी कौशल एंव अनुभव प्राप्त कर लिया है। उल्लेखनीय हैं हमारे वो छोटे–छोटे प्रयास जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर नीतियों एंव कार्यक्रमों में युवाओं के पक्ष में साकारात्मक बदलाव लाने में सहायक रहे हैं। आज अगर हम देखें तो राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (NACP-III) अत्यंत संवेदनशील समूह खासकर युवाओं को व्यापक रूप से संबोधित करने की बात कर रहा है। इस पंच–वर्षीय योजना का मुख्य ध्येय है – एच.आइ.वी. एवम् एड्स से बचाव पर उचित शिक्षा, कंडोम इस्तेमाल का प्रचार एंव रक्त आद्यान तंत्र का विकास। इनके अलावा किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम, रेड–रिबन क्लब व लिंक–वर्कस स्कीम कुछ ऐसी पहल हैं जो खासकर उन युवाओं एंव महिलाओं पर संकेद्रित हैं। जो अन्यथा एच.आई.वी. एवम् एड्स से बचाव पर जरूरी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

> "जबकि इस बिमारी से सबसे ज्यादा युवा वर्ग प्रभावित हो रहा है, यह आवश्यक है कि हम युवाओं को स्वस्थ जीवन शैली की शिक्षा प्रदान करें।
>
> डॉ अम्बुमणी रामदौस, मंत्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के प्रारंभण के अवसर पर।

जबकि भारत की 30.6 प्रतिशत भाग युवा हैं, हम उनकी समस्यायों, ख़ासकर यौनिकता एंव प्रजनन से संबंधित चिंताओं को नजरअंदाज कर आगे बढ़ने की बात सोच ही नहीं सकते। राष्ट्रीय नीतियों में हुए बदलाव इस तथ्य का अनुमोदन करते हैं। सरकार की इन कोशिशों में सहायक भूमिका निभाते हुए, सृजन के क्षमता–वर्धन एंव पक्ष–सर्मथन जैसी प्रभावी कार्यों को और भी प्रगाढ़ बनाना होगा। इस दिशा में पहला कदम यह है कि नेटवर्क में नई नीतियों एंव कार्यक्रम के ऊपर समझ बनाई जाए। ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड ने नई दिल्ली में इसी विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला के दौरान राज्य स्तर पर नीतियों एंव कार्यक्रमों में जरूरी बदलाव; जो उस राज्य के युवाओ के अनुरूप हों पर भी चिन्तन एंव चर्चा हुई। आशा है कि निकट भविष्य में यह चर्चा राज्य–स्तर पर भी; युवाओं के पक्ष में साकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करेंगी।

कुछ माह पूर्व, स्वास्थ्य एंव परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों की संशोधित संख्या जारी कि गई है। आज अनुमानित 25 लाख लोग एच.आइ.वी. से संक्रमित हैं, जो कि पहले की संख्या से बहुत कम हैं। जाहिर है, यह अच्छी ख़बर है, पर युवाओं में एच.आई.वी. की रोकथाम की नीतियों के संदर्भ में ढ़ीलाई की गुंजाइश कतई नहीं है। स्वास्थ्य एंव परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रजनन एंव बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (R.C.H-II) ने भी इस बार किशोर स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए, किशोर प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य कार्यक्रम (ARSH PROGRAMME) का गठन किया है। इस कार्यक्रम का ध्येय युवा मैत्रिपूर्ण केन्द्रों एंव सेवाओं के जरिए किशोरों में स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग को बढ़ावा देना है। एक अच्छी ख़बर यह है कि राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे (NFHS-III) ने अविवाहित महिलाओं तथा 15 से 24 वर्ष के सभी पुरूष को भी अनुसन्धान में शामिल किया है। आशा है कि इस पहल से युवाओं के यौन व्यवहार पर उचित ज्ञान की कमी दूर की जा सकेगी और नीतियों एवं कार्यक्रमों में सुधार लाया जा सकेगा।

इस अंक में हम सरकार की इन्ही कुछ नए प्रयासों पर जानकारी ले कर आऐं हैं। आपकी राय की आशा रखते हैं।

सृजन के उद्देश्य के लिए शुभकामनाएँ।

सृजन संपादकीय मन्डल।

| **सचि जुवेकर,** एन.एम.पी+ | **नेहा नायर,** चेतना | **के. कृष्णमूर्ती,** नवज्योती | **शैलेन्द्र शर्मा,** सिनी

| **रंजन कुमार,** निदान | **शुभा,** सबला | **रोमा भारद्वाज,** सेवा मंदिर |

इस अंक में

एन.ए.सी.पी.–III

आर्श (आर.सी.एच.–II)

यंग पॉज़िटिव् स्पीकर्स

पंचायत सदस्यों के साथ पक्षसमर्थन

सृजन – एक झलक

राष्ट्रीय एड्स रोकथाम कार्यक्रम–III

युवाओं की सुरक्षा के लिए विशेष प्रयास...

पिछले दो दशक में, एच.आई.वी. के प्रति लोंगों की सोच में भारी बदलाव आया है। जिसे पहले असंयमता से जोड़ा जाता था, अब उसे बदलते यौन व्यवहार एंव उनसे जुड़ी अनेक जटिलताओं के संदर्भ में देखा जाने लगा है। जहाँ हर एक व्यक्ति जोखिम के घेरे में है। इस तरह इस घेरे में युवा और अविवाहित भी आ जाते हैं। एन.ए.सी.पी.-II एवं III, बदलते परिवेश के अनुकूल नीतियों में हुए बदलाव को दर्शाती है।

संशोधित आंकड़े एच.आई.वी. के कुल अनुमानित मामले 25 लाख बताते हैं। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि एच.आई.वी. के कुल मामलों में 40% महिला हैं। सन् 2004 में यह अनुमान लगाया गया था कि भारत में 22% मामलों में गृहणियाँ जिनके एक ही साथी रहें हैं पाई गई हैं। युवाओं के संदर्भ में आँकड़ो को देखे तो विश्व स्तर पर एच.आई.वी. के आधे नए मामले 15 सें 25 वर्ष के युवा में हैं तथा भारत में सन् 2005 में लगभग 33% सूचित मामले 15 से 29 वर्ष के आयुवर्ग में पाए गए।

एन.ए.सी.पी.-III के गठन में पहले एवं दूसरे चक्रों के अनुभवों को ध्यान में रखा गया है तथा सन् 2010 तक एच.आई.वी. के संक्रमण में भारी कमी लाने का ध्येय बनाया गया है। यह कार्यक्रम सभी समूहों में एच.आई.वी. संक्रमण में कमी तथा उच्च जोखिम समूह से आम–जन–समूह में एच.आई.वी. के फैलाव की रोकथाम करने की आशा करता है।

एन. ए. सी. पी.-III के अंतर्गत एक प्रशंसनीय बात यह है कि इस कार्यक्रम ने इस बात को मान्यता प्रदान की है कि सम्भवतः युवाओं में जोखिम के बारे में सही समझ तथा उनके व्यवहार, एच.आई.वी. की भावी दिशा को सुनिश्चित करेंगी। महिलाएं, युवा एंव बच्चे जो खास वातावरण में हैं, तथा युवा जो उच्च मामलों वाले ज़िले में हैं, स्कूल छोड़ देने वाले, लड़कियाँ, श्रमिक बच्चे, यौन कर्मी के बच्चे तथा जो एच.आई.वी. के साथ रह रहे हैं, इस कार्यक्रम के तहत विशेष मध्यवर्ती कार्यक्रमों में लक्षित समूह के रूप में चिन्हित किए गए। मानविय संबंधो के संदर्भ में सुरक्षित व्यवहार एंव सोच–विचार करने की क्षमता के विकास पर जोर दिया जाएगा खासकर अधिक प्रभावित क्षेत्रों में युवाओं एंव उच्च जोखिम वाले समुहों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

उपयुक्त दिशा में, एन.ए.सी.पी.-III में विशेष नीतियाँ तैयार की गई हैं जो युवा समूह को तीन अलग सामाजिक वातावरण में सम्बोधित करेंगी।

क) वो युवा जो आम जनसमूह में हैं जैसे – विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में, विद्यालय से बाहर जो समुदाय में है पर विद्यार्थी नहीं है)

नीतिः पाठयक्रम तथा विभिन्न मंत्रालयों द्वारा विशेष कार्यक्रमों में युवाओं के स्वास्थ्य जरूरतों को मुख्य धारा में लाने की कोशिशों के अंतर्गत सम्बोधित किए जाएगें।

किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम एंव रेड रिबन क्लबः– युवाओं के लिए विशेष योजना

किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम, मानव संसाधन मंत्रालय एंव राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था (NACO) द्वारा युवाओं तक पहुँचने का मुख्य तरीका है। यह विद्यालय आधारित कार्यक्रम लगभग 144,409 माध्यमिक एंव उच्च माध्यमिक विद्यालयों में करीब 330 लाख विद्यार्थियों तक दो साल में पहुँचने का लक्ष्य रखता है। किशोरावस्था शिक्षा विभाग एंव राज्य एड्स बचाव एवं नियंत्रण संस्था (SACS) के द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा।

SACS 59 अधिक मामलों वाले ज़िले में 80 प्रतिशत विद्यालय से निकल जाने वाले किशोरों को किशोरावस्था शिक्षा के घेरे में लाने के लिए हमजोली शिक्षण कार्यक्रम भी चला रही है। इनके साथ ही युवा मैत्रिपूर्ण सेवाएं जैसे यौन संक्रमित रोगों पर परामर्श एवं इलाज को बढ़ावा दिया जा रहा है।

रेड रिबन क्लब ऐच्छिक रूप से जुड़े विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय के अन्दर जानकारी एवं शिक्षा बढ़ाने वाली मध्यवर्ती कार्यक्रम है।

यह राज्य एड्स नियंत्रण संस्था (SACS) समर्थित कार्यक्रम विभिन्न ईकाईयों के सहयोग से चलाया जा रहा है, जिसमें खास सहयोगी है नेशनल सर्विस स्कीम (NCS)। यह प्रस्तावित किया गया है कि हर विद्यालय एंव कॉलेज में एक क्लब की स्थापना हो जो युवाओं को एच.आई.वी. एंव एड्स पर जानकारी प्रदान करेगी तथा स्वेच्छा से रक्तदान को बढ़ावा देगी।

यह क्लब युवाओं में व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए जीवन कौशल के विकास में भी सहायक होगी। अब तक करीब 16,000 विद्यालयों एंव कॉलेजो में रेड रिबन क्लब स्थापना हो गई है।

(ख) अति संवेदनशील युवा समुह जो चिह्नित उच्च एवं निम्न संवेदनशील ज़िले में हैं जहाँ अधिक संख्या में यौन, अन्तःशिरा नशीली पदार्थ के प्रयोक्ता, समलैंगिक पुरूष, प्रवसन, एच.आई.वी. जैसे मामले हों।

नीतिः समर्पित लिंक वर्कस व्यवहार परिवर्तन शिक्षा के द्वारा संबोधित करेंगे।

(ग) युवा जो संक्रमण के अत्यधिक जोखिम में है (जैसे– यौन–व्यापार में फँसे किशोर, अन्तःशिरा नशीले पदार्थो के प्रयोक्ता, सड़कों पर जीवन व्यतीत करने वाले बच्चे तथा बाल श्रमिक)

नीतिः समर्पित कार्यकर्त्ताओं एंव समुदाय में काम करने वाली संस्थाओं द्वारा लक्षित मध्यवर्ती एंव समुदाय अधारित कार्यक्रमों द्वारा सम्बोधित किया जाएगा।

"युवाओं में जोखिम के बारे में सही समझ तथा उनका व्यवहार, एच.आई.वी. की भावी दिशा को सुनिश्चित करेंगी।

एन.ए.सी.पी. - III द्वारा समग्र रूप से युवाओं के लिए देखे जा रहे निम्न परिणाम हैं :–

(क) जोखिमपूर्ण व्यवहार में कमी

(ख) एच.आई.वी. के मामलों में कमी।

इसके साथ ही महिलाएं जो प्रजनन आयु वर्ग में है (15 से 49 वर्ष की) तथा बच्चे जो 18 वर्ष से कम उम्र के हैं लक्षित योजनाओं द्वारा जानकारी की कमी खासकर महिलाओं में एंव एड्स की वजह से व्यस्कों की मृत्यु के परिणामस्वरूप बढ़ते बाल–प्रधान परिवार से जुड़ी समस्यायों को सम्बोधित करने से, और भी लाभान्वित होंगे। चूकिं भारत एशिया में सर्वाधिक एच.आई.वी. बहुल देश है, किशोरों में यौन शिक्षा को नैतिकता के नाम पर दरकिनार नहीं किया जा सकता। आशा है आने वाले दिनों में यौन शिक्षा का विरोध कम होगा और युवाओं में एच.आई.वी संक्रमण तथा अन्य यौन एंव प्रजनन संबंधी सम्स्यायों को आसानी से सम्बोधित किया जा सकेगा।

लिंक वर्कस – ग्रामीण स्तर पर एच.आई.वी. की जानकारी बढ़ाएंगे

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के तीसरे चरण में ग्राम स्तर पर जागरूक युवाओं (19 से 25 वर्ष) को लिंक वर्कस के रूप में संगठित किया जा रहा है। इन युवा कार्यकर्त्ताओं को एच.आई.वी. के ज्ञान प्रसार एंव व्यवहारगत बदलाव लाने के लिए शिक्षण के विशिष्ट तरीकों में प्रशिक्षित किया जा रहा है। चिन्हित 'ए' एंव 'बी' ज़िलों के कम से कम 25 प्रतिशत गाँवो में दो सौ कार्यकर्त्ताओं द्वारा कार्य किया जाएगा। यह हर गाँव में हरेक अति संवेदनशील घरों एंव व्यक्तिओं को चिन्हित कर उन्हें संक्रमण से बचाव पर गहन जानकारी देंगे। इसके साथ ही यह कार्यकर्त्ता पंचायत, महिला मंडल, स्वंयसेवी समूह विद्यार्थियों के साथ भी एच. आई. वी. के ज्ञान के प्रसार के लिए सक्रिय रूप से काम करेंगी। इन सबका लक्ष्य यह है कि ज़िले के संवेदनशील इलाके एच. आई. वी. व एड्स से बचे रहें।

लिंक वर्कस से यह भी अपेक्षा किया गया है कि वह उन व्यक्तियों को स्वैच्छिक जाँच के लिए प्रेरित करेंगे जो जाँच के लिए जरा भी तैयार नहीं है। चूंकि इस दल का मुख्य लक्ष्य युवा हैं– लिंक वर्कस से अपेक्षा की गई है कि वह साप्ताहिक युवा स्वास्थ्य केंद्र चलाऐ, जहाँ वह उनकी जिज्ञासाओं एंव समस्याओं को सम्बोधित कर सकें तथा उन्हें अपनी संवेदनशीलता को कम करने में सशक्त बना सकें।

इस प्रक्रिया के तहत, लिंक वर्कस से यह भी आशा रखी गई है कि वह प्रत्येक गाँव में 10 स्वंयसेवक तैयार करेगें जो एच. आई. वी. से बचाव एंव व्यवहारगत बदलाव के लिए जरूरी संवाद को कायम रखेंगे तथा स्वास्थ्य सेवाओं, रेफरल, परामर्श आदि के लिए सम्पर्क सूत्र का काम करेगें। यह लिंक वर्कस की अनुपस्थिति में उनका दायित्व भी निभाएंगे।

''समस्या नहीं सामाधान हैं हम...''

युवा पॉज़िटिव् स्पीकर्स फोरम

नागपुर की सत्तरह वर्षीय गीता का जीवन थम सा गया था जब उसे चिकित्सकीय जाँच में बताया गया कि वह एच. आई. वी. पॉज़िटिव् है। गीता के लिए अपनी मासुमियत को साबित करने का कोई रास्ता नहीं बचा था, जब उसका इंजीनियर पति उससे अनैतिक संबधों के ताने देकर तलाक की माँग की थी। गीता उस वक्त छः महीने की गर्भवती थी। पति एंव ससुराल द्वारा निकाल देने के बाद गीता के पास सामाजिक दबाव के कारण अपने मातृत्व के सपने को खत्म करने के अलावा और कोई चारा न बचा था ''मैं हमेशा अपनी ज़िन्दगी खत्म करने की बात सोचती, पर तभी मुझे एक हमजोली शिक्षक मिला जो मुझे नेटवर्क ऑफ पॉज़िटिव् पिपलस् के बारे में बताया,'' गीता कहती हैं।

पूणे के पंद्रह वर्षीय राहुल बताते हैं कि कैसे उनकी ज़िन्दगी एक पहेली के समान थी, जब उनके मामा उन्हें कई परोपकारी संस्थाओं में अन्नत मुलाकातों के लिए ले जाते और बदले में उसे पैसे या उसके इस्तेमाल की चीज़ें भेंट में मिलती। पर यह सब समझने में राहुल को ज्यादा समय नहीं लगा कि आखिर उसीके साथ यह विशेष व्यवहार क्यों किया जा रहा था। ''मुझे मुफ़्त में पोषक खाद्ध पदार्थ एंव किताबें मिलती। मुझे बुरा लगता था जब मेरे दोस्त इसके बारे में पूछते। उन्हें समझ में नहीं आता था कि आखिर उन्हें क्यों नहीं यह सुविधाएं मिल सकती, लेकिन मैंने जल्दी ही इस बात को समझा कि मुझे हमेशा पिछली कुर्सी पर कचरे के डब्बे के पास बिठाया जाता था। अगर मुझे एक खरोंच भी आ जाए तो मुझे ठीक न होने तक स्कूल आने से मना कर दिया जाता। मैने अपने माता–पिता को कभी नहीं देखा पर मुझे उनकी कमी महसूस होती है,'' राहुल अपने अनुभवों को अन्य सत्तरह बच्चों के साथ बाँटते हैं जो युवा पॉज़िटिव् स्पीकर्स फोरम् को स्थापित करने के लिए एकजुट हुए हैं।

युवा पॉज़िटिव् स्पीकर्स फोरम्, नेटवर्क ऑफ महाराष्ट्रा बॉय पीपल लिविंग विथ एच.आई.वी. एडस् (NMP+); पूणे एंव ममता–हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एण्ड चाईल्ड, नई दिल्ली के द्वारा सृजन नेटवर्क के अंतर्गत एक नई पहल है। मई 11, 2007 में पूणे में एच. आई. वी. के साथ रह रहे युवाओं को यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य पर सार्वजनिक स्थलों पर बोलने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इस कार्यशाला में स्वेच्छा से जुड़े अठारह युवाओं ने भाग लिया। यह वक्ता युवाओं को उम्र एवं संस्कृति के अनुसार यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य पर जानकारी देने के साथ–साथ दूसरे एच. आई. वी. के साथ रह रहे युवाओं को इस काम के लिए प्रेरित करेंगे।

''जहाँ जब कि पचास प्रतिशत एच. आई. वी. के नए मामले युवा वर्ग में पाए जा रहें हैं, युवा पॉज़िटिव् स्पीकर्स फोरम् का गठन एक बड़ी जरूरत है। यह फोरम् एच. आई. वी. के साथ रह रहे युवाओं के अधिकारों एवं –समस्यायों के लिए काम करेगा, भेद–भाव को कम करेगा और स्वैच्छिक जाँच एवं परामर्श को बढ़ावा देगा।'' कहते हैं डॉ. सुनिल मेहरा, ममता के कार्यकारी निदेशक।

''अब मेरे लिए यह मायने नहीं रखता कि मुझे संक्रमण कैसे हुआ पर मेरे लिए यह बात महत्व रखती है कि मैं कैसे एच. आई. वी. के साथ बेहतर जिन्दगी जी सकती हूँ। मुझे अब मालूम है कि एच. आई. वी. का मतलब मौत नहीं होता,'' मुस्कुराते हुए गीता कहती हैं। *''हम समस्या नहीं सामाधान हैं हम''* कहते हैं राहुल जबकि चुलबुली रूपा इस बात पर जोर देती हैं कि एच. आई. वी. के साथ भी जीवन है, पर जरूरत है तो बस प्यार और सहयोग की।'' ''यह पॉज़िटिव् स्पीकर्स इसलिए नहीं बने क्यों कि वह एच. आई वी. से संक्रमित है बल्कि इसलिए क्योंकि वह हिम्मत एंव आशाओं से परिपूर्ण हैं जो लोगों में साकारात्मक बदलाव लाने के लिए अत्यन्त जरूरी है,'' मनोज परदेसी NMP+ के सदस्य, ने कहा। आगे मनोज कहते हैं कि हमारे युवा जानते हैं कि यह एच. आई. वी. के संक्रमण को यह नहीं फैला रहे बल्कि वह जो अपने संक्रमण की स्थिति से अनभिज्ञ हैं, अनजाने में संक्रमण को फैला रहे हैं। एच. आई. वी. पॉज़िटिव् व्यक्ति स्वंय ही संक्रमण को रोकने के लिए और अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए परहेज़ रखता है। इसलिए यह जरूरी है कि लोग स्वैच्छिक जाँच एंव परामर्श के लिए आगे आएं, क्योंकि यह हर स्थिति में अपने जीवन को बेहतर बनाने में मददगार साबित होगी।

> ''चुप्पी तोड़ो
> एड्स मानवता के ख़िलाफ एक युद्ध है। आवश्यक है कि हम इस चुप्पी को तोड़ें, भेद–भाव को मिटा दें और पूरी तरह से एड्स के विरूद्ध इस लड़ाई में एक जुट हो जाएं।''
>
> नेलसन् मंडेला

प्रशंसनिय हैं यह युवा सैनिक जिन्होंने अपने कड़वे अनुभवों द्वारा जागरूकता एंव शिक्षा की जरूरत को समझा ताकि लोंगों में एच.आई.वी. से जुड़ा हुआ डर, भेद–भाव एवं अज्ञानता को कम किया जा सके।

प्रजनन एंव बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम–चरण–II

किशोर प्रजनन एंव यौन स्वास्थ्य पर विशेष कार्य

किशोर समरूप समूह नहीं हैं बल्कि उनकी परिस्थिति उम्र, लैंगिकता, वैवाहिक स्थिति, समाज में उनकी श्रेणी, क्षेत्र एंव संस्कृति के संदर्भ में बदलती रहती हैं। यह कहना है स्वास्थ्य एंव परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रजनन एंव बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम–II (RCH-II) का जिसे अप्रैल 1, 2005 को शुरू किया गया। यह कथन इस बात को दर्शाता है कि किस तरह कार्यक्रम ने मात्र परिवार नियोजन की जगह व्यापक 'परिवार कल्याण' के प्रति अपनी नीतियों में परिवर्तन लाया है। वैसे तो इस कार्यक्रम का मुख्य ध्येय है कुछ महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सूचकों में परिवर्तन लाना, जो है जननक्षमता–दर, शिशु–मृत्यु दर तथा मातृ–मृत्यु दर। परन्तु इन स्वास्थ्य सूचकों, युवाओं में बढ़ते यौन संक्रमण एंव किशोरों में स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवहारिकता इन तीनों के परस्पर–संबंध पर समकालीन समझ, सरकार द्वारा किशोर प्रजनन एंव यौन स्वास्थ्य कार्यक्रम (ARSH) को रंखांकित करती है। दस्तावेज यह भी कहते हैं कि कार्यक्रम के लक्ष्यों के संदर्भ में देखा जाए तो किशोरों की जरूरतों को सम्बोधित करने से कई लाभ हैं जैसे– विवाह की उम्र में बढ़त, किशोरी गर्भधारण में कमी, प्रसव संबंधित जटिलताओं से बचाव एंव प्रबंधन जिसमें सुरक्षित गर्भपात एंव असुरक्षित यौन व्यवहार में कमी भी शामिल हैं। आर्श (ARSH) कार्यक्रम के अंतर्गत यह द्विसूत्रिय नीति सबसे पहले सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा सूचना एंव संवाद सामग्रियों में किशोर स्वास्थ्य के मुद्दे को जोड़ने की बात करती है तथा हरेक मध्यवर्ती कार्यक्रम में किशोरों में गर्भनिरोध, गर्भ की देख–रेख एंव यौन संक्रमणों से बचाव के लिए विशेष कार्यक्रम को लाने की बात की गई है। दुसरा लक्ष्य प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर निश्चित दिनों एंव निश्चित समय पर खास किशोंरो के लिए स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। यह विशेष कोशिश कम उम्र में विवाह के आँकड़ो के आधार पर चिन्हित ज़िलों के लिए है। उपकेंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के स्तर पर बाह्य रोगी जाँच (ओ.पी.डी.) एंव निश्चित समय पर सेवाओं की उपलब्धता के लिए कार्यवाई प्रस्तावित की गई है। जैसे–मासिक क्लिनिक जो दोनों नव–विवाहित या अविवाहित किशोरियों की जरूरतों को पूरा करेंगी मुख्य सेवाओं में किशोरों के लिए शामिल होगीं निरोधक, रोगनाशक एंव परार्मश सेवाएं। 'आर्श' के लिए सहायक वातावरण तैयार करने के लिए सभी पणधारियों के साथ ज़िला एंव राष्ट्रीय स्तर पर संवाद स्थापित किए जाएंगे। स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को भी इस दिशा में और सक्षम बनाया जाएगा। उनमें किशोरावस्था से जुड़ी बातें या समस्याएं जैसे उनकी संवेदनशीलता, सेवाओं की जरूरत तथा वर्तमान सेवाओं किशोरों के अनुरूप मैत्रिपूर्ण बनाने की समझ बढ़ाई जाएगी। किशोरों के लिए क्लिनिक चलाने के लिए निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की सम्भावना पर भी विचार किया जाएगा।

युवाओं पर आंकड़ों का एकमात्र संकलन

ममता ने पहली बार युवाओं पर एक विशेष आंकड़ो का संकलन जारी किया है। संकलन में युवाओं के यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य पर महत्वर्पूण आंकड़ो को 15 वर्गो/श्रेणियों में दर्शाया गया है : युवा जनसंख्या; प्रजनन क्षमता; यौन व्यवहार; मृत्यु–दर, परिवार–नियोजन, स्वास्थ्य सुविधा; प्रजनन स्वास्थ्य; वैवाहिक स्थिति; पोषण; शिक्षा; कार्य–बल; सामाजिक; अपराधिक आंकड़े; नशीले पदार्थों का सेवन; शारीरिक दुर्व्यवहार; व स्वास्थ्य देख–भाल सुविधाओं की गुणवत्ता। यह आंकड़े ज़िलावार व राज्यवार उपलब्ध हैं व इन्हें विश्वसनीय सुत्रों से एकत्रित किया एंव मिलाया गया है, जैसे– भारतीय जनगणना; नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS); DLHS-RCM, SRS, NACO एंव क्राईम इन इंडिया (गृह मंत्रालय द्वारा)। यह संकलन आने वाले दिनों में युवाओं के लिए विभिन्न स्तर पर पक्षसमर्थन, नई नीतियों एंव विकास कार्यक्रम को बल देगा। प्रत्येक वर्ग में दिए गए आंकड़ों को तीन तरीकों से देखा जा सकता है–
आंकड़ों की तालिका ग्राफ एंव मैप (नक्शे) में।
सुविधा के लिए ड्राप बाक्स भी दिए गए हैं।

इस आंकड़ेवार प्रदर्शन को यहाँ देखा जा सकता है:– www.yrshr.org

पंचायत प्रतिनिधियों ने युवाओं के लिए विकास कार्यक्रमों को समर्थन दिया

सृजन ने ग्रामीण स्तर पर अपने प्रयासों में तीव्रता लाई है ताकि युवाओं के यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य की दिशा में पंचायत प्रतिनिधियों का समर्थन अंकित किया जा सके। हाँलाकि मुख्य ध्येय है ग्रामीण युवाओं के लिए इस मुद्दे पर शिक्षण कार्यक्रम में आई बाधाओं को कम करना, पर कुछ ज़िलों में पंचायत द्वारा दिए गए समर्थन अत्यंत सराहनीय हैं।

इस नई योजना में सृजन नेटवर्क ने ज़िला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग; ब्लॉक विकास महिला एंव बाल विभाग के मुख्य अधिकारियों एंव पंचायत सदस्यों एंव ग्राम प्रधान को एक मंच पर लाने की कोशिश की है। उद्देश्य है कि वह सब अपने क्षेत्र के युवाओं के विकास के लिए मिलकर साकारात्मक कदम उठायें आशा है कि ऐसी बैठकें जल्दी ही यौन एंव प्रजनन स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर भी ग्राम स्तर पर सोच–विचार प्रेरित करेंगी जो अन्यथा एक तरफा संवाद में मुश्किल हो जाती है। इस समय पंचायत प्रतिनिधियों के साथ यह बैठकें उत्तर–प्रदेश, बिहार, गुजरात एंव राजस्थान के पंद्रह उच्च जोखिम वाले जिलों में आयोजित की गई हैं।

विकास कार्यों में भाग लें'

युवाओं को सेक्स शिक्षा जरूरी'

एचआइवी संक्रमित नौकर से नहीं निकाले जा सकते

युवाओं को यौन-शिक्षा देना जरूरी :

जयपुर में सरकार की नीतियों एंव कार्यक्रमों पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित

सेवा मंदिर के नेतृत्व में सृजन राजस्थान ने युवाओं के लिए राज्य–स्तर पर नीतियों एंव सरकार के कार्यक्रमों की समझ बनाने के लिए 15 से 16 मई 2007 को एक बैठक की। यह राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में आयोजित कार्यशाला का अनुवर्तन था। राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी एंव प्रतिष्ठित वक्ताओं ने इस बैठक को सम्बोधित किया। श्री जे. सी. मोहंती, मुख्य सचिव, युवा एंव खेल मंत्रालय, (MOYAS) ने विस्तार से युवा नीति पर चर्चा की तथा मंत्रालय द्वारा नए कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। श्री यू. डी. खान, सचिव (MOYAS) एंव श्री सतीश शर्मा, सचिव–युथ कॉन्सिल ने भी अपने विचार रखे। सुश्री वैदेही अग्निहोत्री, संचालक–किशोर प्रजनन स्वास्थ्य कार्यक्रम, स्वास्थ्य सेवा निदेशालय, ने भी राजस्थान सरकार द्वारा जीवन कौशल शिक्षा को शिक्षण पाठ्यक्रम के साथ जोड़ने की पहल का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अंदाजन 3.5 लाख विद्यार्थी इस पहल से लाभान्वित होंगे।

राज्य एड्स नियंत्रण संगठन, नेहरू युवा केन्द्र, राजस्थान मिशन ऑफ लाईवलीहुड तथा कर्पाट के प्रतिनिधियों ने भी युवाओं की भुमिका पर अपने विचार रखें।

'हल्दी की जल्दी क्यों,' सृजन पोस्टरों की हुई सराहना

"मेरी माँ की मृत्यु के बाद मेरे परिवार वाले घर में एक स्त्री लाना चाहते थे, इसलिए मेरी शादी कर दी। तब मेरी उम्र 14 वर्ष ही थी। जल्दी ही मैं पिता बन गया। कभी पता ही नहीं चला कि कब इन जिम्मेदारियों को निभाते मैं बड़ा हो गया | कम उम्र में विवाह पर रोक लगाने के लिए सन् 2006 में जैसलमेर में हुई बैठक के दौरान 19 वर्षिय युवा जो अब हम-जोली शिक्षक भी है, अपने अनुभव बताता है।

सृजन द्वारा बनाए पोस्टरों को सातों राज्यों में सराहा गया। राजस्थान में माननीय मुख्यमंत्री ने सृजन को इस पहल पर बधाई प्रेषित किया। चित्रों में पहले हैं, राजस्थान महिला कमीशन की अध्यक्ष श्रीमति तारा भंडारी एंव खेल व युवा मंत्रालय के सचिव श्री मनोहर कांत, आखा तीज के अवसर पर "बाल विवाह के अनचाहे उपहार" पोस्टर का विमोचन करते हुए। एक और आयोजन में माननीय महिला एंव बाल विकास मंत्री, राजस्थान, श्री कनकमल कटारा जी एंव प्रमुख सचिव श्रीमती अल्का काला ने प्रेस कॉफ्रेंस में 'हल्दी की जल्दी' पोस्टर का विमोचन किया (देखें दूसरा चित्र)। अन्य राज्य जैसे आन्ध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात एंव उत्तर प्रदेश में भी पोस्टरों को सराहा गया।

तीसरे चित्र में लखनऊ के सूचना आयुक्त अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस (अगस्त 12, 2007) के उपलक्ष्य में पोस्टरों का विमोचन करते हुए।

प्रवसन में एच.आई.वी. के जोखिम पर बैठक

आईडिया संस्था (Idea) ने जो कि सृजन बिहार की क्षेत्रिय समन्वयक है, प्रवसन से एच.आई.वी. के संबंध पर बेहतर समझ बनाने के लिए 25 से 30 जून, 2006, को राज्य स्तरीय बैठक आयोजित किया। इस बैठक में प्रवसन के कारणों पर तथा प्रवासियों के स्वास्थ्य पर प्रभाव जैसे उच्च–जोखिम व्यवहार अपनाना, एच.आई.वी. संक्रमण के खतरे पर विस्तृत जानकारी दी गई। विभिन्न अंतरसंबंधी विषय जैसे प्रवासियों का सशक्तीकरण, सुरक्षित यौन व्यवहार पर जागरूकता, एच.आई.वी. के कारण भेद–भाव एंव एच.आई.वी. के साथ रह रहे लोगों की भागीदारी पर भी चर्चा हुई।

डॉ. दिवाकर तेजस्वी, अमेरिकन अकादमी ऑफ फैमिली फिज़िशियन एंव इंटरनेशनल हेल्थ ऑरगनाइज़ेशन् के क्षेत्रीय निदेशक प्रवासी मजदूरों तथा खेती पर उनकी निर्भरता के बारे में बताया। उन्होंने यह जानकारी दी कि ज्यादातर प्रवासी 15 से 24 वर्ष के युवा हैं और वह अनपढ़ हैं। इस वजह से, एच.आई.वी. संक्रमण के प्रति उनके खतरे की सम्भावना अधिक हो जाती है।

ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम एंव जानकारी के अधिकार पर भी चर्चा हुई। उसके बाद छाँव संस्था के श्री ब्रजेश सिंह के सहयोग से भागीदारों ने मिलकर इस मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए एक नीति तैयार की। दूसरे प्रतिष्ठित वक्ता थे– डॉ. सुधीर कुमार (ए. एन. सिन्हा इंस्टिट्यूट), डॉ. देवेन्द्र प्रसाद, उपनिदेशक बिहार एड्स नियंत्रण संगठन एंव डॉ मुकेश किशोर।

युवाओं को नेतृत्व के लिए तैयार करते हुए

जनप्रतिनिधियों द्वारा युवाओं को प्रोत्साहन

एचआईवी पीड़ितों को बस पास देने पर विचार : मंत्री

बिहार में माननीय परिवहन मंत्री ने एच.आई.वी. के साथ जी रहे व्यक्तियों को बस–पास उपलब्ध कराने के लिए वचन दिया ताकि वह सुलभता से दवा एंव अन्य सेवा का लाभ उठा सकें।

माननीय संसद सदस्य श्री ब्रजेश पाठक अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस 12 अगस्त 2006, लखनऊ में युवा रैली को हरी झंडी दिखाते हुए।

आन्ध्रा प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल में कम उम्र में विवाह के विरूद्ध अभियान

आन्ध्र प्रदेश में सृजन द्वारा एक संगीत मय नाटक लिखा व निर्देशित किया गया है जिसका शीर्षक 'मल्ली' है। यह मल्ली नामक लड़की की सच्ची कहानी पर आधारित नाटक है। मल्ली का विवाह कम उम्र में उसकी मर्जी के विरूध कर दिया गया था। इस हृदयविदारक नाटक को मीडिया में भी सराहा गया तथा दूरदर्शन पर दिखाया गया। पश्चिम बंगाल में सभी सृजन जिलों में अभियान चलाए गए। इसके साथ ही 32 युवा–जानकारी–केन्द्रों (YICs) को विद्यालय न जाने वाले युवाओं किशोरों में जागरूकता लाने के लिए और सशक्त बनाया गया।

गुजरात में युवा मेला

सृजन गुजरात ने सन् 2005 में भण्डारी पूनम के अवसर पर मेहसाना के उम्टा गाँव में युवा मेला का आयोजन किया। मेहसाना जिले में लिंग–अनुपात न्यूनतम है। अनुमानित पाँच हज़ार लोगों तक मनोरंजन कार्यक्रम द्वारा कम उम्र में विवाह, कन्या भ्रूण हत्या एंव एच.आई.वी. जैसे मुद्दों पर जानकारी दि गई।

MAMTA rfsu Sida

सृजन सचिवालय
ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एण्ड चाइल्ड
B-5, ग्रेटर कैलाश एन्कलेव–II नई दिल्ली – 110048
फोनः 91–11–29220210, 29220220 फैक्सः 91–11–29220575
ईमेलः mamta@ndf.vsnl.net.in
वेबसाईटः www.yrshr.org; www.mamta-himc.org

संकलन एंव संपादन : प्रियंका, प्रकाशन : ममता–हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एण्ड चाइल्ड